कुल प्रश्नों की संख्या : 28
Total No. of Questions: 28

कुल पृष्ठों की संख्या : 08
Total No. of Pages: 08

हाई स्कूल परीक्षा, दिसम्बर–2021

001

विषय : हिन्दी (विशिष्ट)

Subject: HINDI (Special)

समय : 03 घण्टे
Time: 03 Hours

पूर्णांक : 100
Maximum Marks: 100

निर्देशः–

(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न सबसे पहले हल कीजिए।

(2) प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। प्रत्येक के लिए एक–एक (1X5X5=25) अंक निर्धारित हैं।

(3) प्रश्न क्रमांक 6 से 16 तक प्रत्येक के लिए दो–दो अंक निर्धारित हैं। प्रत्येक का उत्तर लगभग 30 शब्दों में लिखिए।

(4) प्रश्न क्रमांक 17 से 19 तक प्रत्येक के लिए तीन–तीन अंक निर्धारित हैं। शब्द सीमा 30 शब्द से 75 शब्द हैं।

(5) प्रश्न क्रमांक 20 से 25 तक प्रत्येक के लिए चार–चार अंक निर्धारित हैं। शब्द सीमा 75 शब्द से 120 शब्द हैं।

(6) प्रश्न क्रमांक 26 एवं 27 के लिए पांच–पांच अंक निर्धारित हैं। शब्द सीमा 120 शब्द से 150 शब्द हैं।

(7) प्रश्न क्रमांक 28 के लिए (7+3=10) अंक निर्धारित हैं। शब्द सीमा 200 शब्द हैं।

(8) प्रत्येक प्रश्न के लिए आवंटित अंक उसके सम्मुख अंकित हैं।

schools.aglasem.com

aglasem.com

प्र.1 निम्नलिखित कथनों के सही विकल्प चुनकर लिखिए – **(5×1=5)**

(i) 'पथ की पहचान' कविता के रचनाकार हैं –

(i) रामधारी सिंह 'दिनकर' (ii) जयशंकर प्रसाद

(iii) रामनरेश त्रिपाठी (iv) हरिवंशराय 'बच्चन'

(ii) 'गेहूँ और गुलाब' निबंध है –

(i) ललित (ii) विचारात्मक

(iii) वर्णनात्मक (iv) राजनीतिक

(iii) सब कुछ जानने वाले को कहा जाता है –

(i) जानकार (ii) ज्ञानी

(iii) सर्वज्ञ (iv) बहुज्ञानी

(iv) वाक्य की दृष्टि से वाक्य के प्रकार होते हैं –

(i) दो (ii) चार

(iii) तीन (iv) पाँच

(v) सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है –

(i) रामचरित मानस (ii) कामायनी

(iii) साकेत (iv) पद्मावत

प्र.2 निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों का चयन कर कीजिए – **(5×1=5)**

(i) आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता ..... हैं।

(बिहारी / केशवदास)

(ii) विरह और वेदना की कवयित्री ..... हैं।

(सुभद्रा कुमारी चौहान / महादेवी)

(iii) निंदा का उद्‌गम ..... से होता है। (हीनता / चुगली)

(iv) दो वर्णों के मेल को ..... कहते हैं। (संधि / समास)

(v) रंगमंच पर अभिनय आदि देखकर रसानुभूति कराने वाला ..... कहलाता है।

(श्रव्य काव्य / दृश्य काव्य)

schools.aglasem.com
aglasem.com

प्र.3 निम्नलिखित कथनों में सत्य/असत्य छाँटिए – **(5×1=5)**

(i) 'पुरुषो में उत्तम' पुरुषोत्तम कहलाता है।

(ii) अनाथ के माता–पिता होते हैं।

(iii) गाँव का आदमी निरक्षर भले ही हो लेकिन सुसंस्कृत होता है।

(iv) युधिष्ठिर के उत्तरों से यक्ष प्रसन्न हो गए थे।

(v) आकाश का पर्यायवाची शब्द 'कमल' है।

प्र.4 निम्नलिखित का मिलान कर सही जोड़ी बनाइए – **(5×1=5)**

'अ'		**'ब'**
(1)	'नीति अष्टक' के रचनाकार हैं	(1) स्थिर प्रज्ञ प्रदर्शन
(2)	मन की एकाग्रता	(2) द्विगु समास
(3)	'सुश्रुत संहिता'	(3) महाकाव्य
(4)	चौमासा	(4) भारतेन्दु हरिशचन्द्र
(5)	पृथ्वीराज रासो	(5) शल्य चिकित्सा

प्र.5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द/वाक्य में लिखिए – **(5×1=5)**

(i) जिन छंदो में मात्राओं की गणना होती है, उन्हें क्या कहते हैं?

(ii) 'मैंने पाठ नहीं पढ़ा।' वाक्य किस प्रकार का है?

(iii) अद्‌भूत रस का स्थायी भाव होगा।

(iv) पुराणों के अनुसार नर्मदा का जन्म किससे हुआ है?

(v) बिना विचारे कार्य करने से क्या होता है?

प्र.6 ईश्वर ने रोगों से दूर करने के लिए मनुष्य को क्या दिया है? **(2)**

अथवा

गोपाल के कुण्डलों की आकृति कैसी है?

प्र.7 कोयल को उसके किस गुण के कारण पसंद किया जाता है? **(2)**

अथवा

बसंत के आने पर कौन तान भरने लगती है?

schools.aglasem.com
aglasem.com

प्र.8 लोहा किसकी स्वाँस से भस्म हो जाता है? (2)

अथवा

चलने से पूर्व बटोही को क्या करना चाहिए?

प्र.9 सखी प्रातः काल किसके द्वार पर जाती है? (2)

अथवा

कवि नागार्जुन ने बादलों को कहाँ घिरते देखा है?

प्र.10 मधुप की मधुर गुनगुन विश्व पर क्या प्रभाव डालेगी? (2)

अथवा

आसमान पर किस तरह के बादल उड़ रहे थे?

प्र.11 'दिवार में दरार पड़ गई' का आशय किससे हैं? (2)

अथवा

आज का मानव किस परम्परा से प्रभावित है?

प्र.12 लेखक ने संगीत का जन्म किससे माना है? (2)

अथवा

मुट्ठी भर हाड़ाओं ने किसे पराजित किया है?

प्र.13 सुजान सिंह कौन थे? (2)

अथवा

मन को एकाग्र करने के बाह्य साधन क्या हैं?

प्र.14 प्राचीन काल में आयुर्वेद की पाठशाला कहाँ पर थी? (2)

अथवा

सोन और नर्मदा का जल प्रवाह किन–किन दिशाओं में है?

schools.aglasem.com
aglasem.com

प्र.15 निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए – (कोई–दो) **(2)**

(1) कलई खुलना

(2) नौ–दो ग्यारह होना

(3) लोहा मानना

अथवा

निम्नलिखित वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए – (कोई–दो)

(1) पूजा करने वाला

(2) काम से जी चुराने वाला

(3) अभी–अभी जन्म लेने वाला

प्र.16 काव्य अथवा कविता किसे कहते हैं? **(2)**

अथवा

रस की निष्पत्ति कैसे होती है?

प्र.17 निंदा की प्रवृत्ति से बचने के लिए क्या करना चाहिए? **(3)**

अथवा

मानव जीवन को सार्थकता कैसे प्राप्त होती है?

प्र.18 निम्नलिखित का संधि–विच्छेद करके संधि का नाम लिखिए – (कोई–दो) **(3)**

(1) महाशय

(2) सज्जन

(3) मनोभाव

अथवा

निम्नलिखित के समास विग्रह करके समास का नाम लिखिए – (कोई–दो)

(1) पंचानन

(2) भयभीत

(3) त्रिलोक

schools.aglasem.com

aglasem.com

प्र.19 दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य में क्या अंतर है? (3)

अथवा

स्थायी भाव तथा संचारी भाव में अंतर बताइए।

प्र.20 प्रयोगवाद और नई कविता की प्रमुख विशेषताएं लिखिए। (4)

अथवा

मध्यप्रदेश के लोक साहित्य के प्रमुख प्रकार कौन–कौन से हैं?

प्र.21 द्विवेदी युग के दो प्रमुख कवियों एवं महाकाव्यों के नाम बताइए। (4)

अथवा

छायावाद का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

प्र.22 सूरदास अथवा सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यगत विशेषताएं निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर लिखिए – (4)

(1) दो रचनाएँ

(2) भावपक्ष – कलापक्ष

(3) साहित्य में स्थान

प्र.23 हरिकृष्ण ''प्रेमी'' अथवा रामवृक्ष बेनीपुरी का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर लिखिए – (4)

(1) दो रचनाएँ

(2) भाषा एवं शैली

(3) साहित्य में स्थान

schools.aglasem.com
aglasem.com

प्र.24 निम्नलिखित पद्यांश की व्याख्या संदर्भ, प्रसंग सहित कीजिए – (4)

लिखन बैठि जाकी छबी, गहि–गहि गरब गरूर।

भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर।।

अथवा

कामी क्रोधी लालची, इन पै भक्ति न होय।

भक्ति करै कोई शूरमाँ, जाति वरण कुल खोय।।

प्र.25 निम्नलिखित में से किसी एक गघांश की व्याख्या संदर्भ सहित लिखिए – (4)

महत्त्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है, उस कार्य के करने की भावना में है। बड़े–से–बड़ा कार्य हीन है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना नहीं है और छोटे–से–छोटा कार्य की महान है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना है।

अथवा

मानव शरीर में पेट का स्थान नीचे है, हृदय का ऊपर और मस्तिष्क का सबसे ऊपर! पशुओं की तरह उसका पेट और मानस समान्तर रेखा में नहीं है। जिस दिन वह सीधे तनकर खड़ा हुआ, मानस ने उसके पेट पर विजय की घोषण की।

प्र.26 निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

स्वार्थ और परमार्थ मानव की दो प्रवृत्तियाँ हैं। हम अधिकतर सभी कार्य अपने लिए करते हैं। पर के लिए सर्वस्व बलिदान करना ही सच्ची मानवता है। यही धर्म है, यही पुण्य है। इसे ही परोपकार कहते हैं। प्रकृति हमें निरंतर परोपकार का संदेश देती है। नदी दूसरों के लिए बहती है। वृक्ष मनुष्यों को छाया तथा फल देने के लिए ही धूप, आँधी, वर्षा और तूफानों में अपना सब कुछ बलिदान कर देते हैं।

प्रश्न –

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। (1)

(ख) सच्ची मानवता क्या है? (1)

(ग) वृक्ष हमें परोपकार का संदेश कैसे देते हैं? (1)

(घ) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए। (2)

schools.aglasem.com

aglasem.com

प्र.27 अपने विद्यालय के प्राचार्य को प्रार्थना–पत्र लिखिए जिसमें बुक बैंक से पुस्तकें प्रदान करने के लिए निवेदन किया जाए। (5)

अथवा

अपने बड़े भाई के विवाह में अपने मित्र को आमंत्रित करने के लिए पत्र लिखिए।

प्र.28 (अ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए – (7)

(1) विज्ञान का जीवन पर प्रभाव

(2) वृक्षारोपण एवं मानव

(3) पर्यावरण प्रदूषण

(4) पुस्तकालय का महत्त्व

(5) कम्प्यूटर

(ब) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर रूपरेखा लिखिए – (3)

(1) स्वच्छ भारत अभियान

(2) नारी शिक्षा का महत्त्व

(3) किसी त्यौहार का वर्णन

(4) दहेज प्रथा : एक अभिशाप

(5) राष्ट्रीय एकता

.....

schools.aglasem.com

aglasem.com

कुल पृष्ठों की संख्या : 07

हाई स्कूल परीक्षा, दिसम्बर–2021

आदर्श उत्तर

001

विषय : हिन्दी (विशिष्ट)

Subject: HINDI (Special)

उ.1 (i) हरिवंशराय 'बच्चन' (5×1=5)

(ii) ललित

(iii) सर्वज्ञ

(iv) तीन

(v) रामचरित मानस

उ.2 (i) बिहारी (5×1=5)

(ii) महादेवी

(iii) हीनता

(iv) संधि

(v) दृश्य काव्य

उ.3 (i) सत्य (5×1=5)

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

(v) असत्य

उ.4 (i) भारतेन्दु हरिशचन्द्र (5×1=5)

(ii) स्थिर प्रज्ञ प्रदर्शन

(iii) शल्य चिकित्सा

(iv) द्विगु समास

(v) महाकाव्य

schools.aglasem.com

aglasem.com

उ.5 (i) मात्रिक कून्द (5×1=5)

(ii) निषेधात्मक वाक्य

(iii) विस्मय

(iv) शंकर की पसीनों की बूंदो से

(v) पश्चात करना पड़ता हैं।

उ.6 ईश्वर ने रोगों से दूर करने के लिए मनुष्य को औषधियाँ की है। (2)

अथवा

उ.6 गोपाल के कुण्डलों की आकृति मकर की हैं।

उ.7 कोयल को उसके मधुर स्वर के कारण पसन्द किया जाता हैं। (2)

अथवा

उ.7 बसन्त के आने पर कोयल तान भरने लगती हैं।

उ.8 मरी खाल से लोहे को तपाने वाली धौकनी बनाई जाती हैं। लोहा मरी खाल की धौंकनी का स्वाँस से भस्म हो जाता हैं। (2)

अथवा

उ.8 चलने से पूर्व बटोही को सही पथ की पहचाना कर लेनी चाहिए।

उ.9 सखी प्रातः काल अवध के राजा दशस्थ के द्वार पर जाती हैं। (2)

अथवा

उ.9 कवि नागार्जुन ने बादलों को स्वच्छ श्वेत पर्वत – शिखरों पर घिरले देखा।

उ.10 मधुप की मधुर गुनगुन मन को आनन्दित कर देने वाली होती हैं। गुनगुन की सरस ध्वनि विश्व का करूण कृन्दन भुला देगी। (2)

अथवा

उ.10 आसमान पर झिने – झिने, कजराटे, चंचल बादल उड़ रहे थे।

उ.11 'दीवार में दरार पड़ गई' से आशय लेखक के मन में जो पूर्णता का आनन्द भाव था, उसमें उनको कभी का अनुभव होने से हैं। (2)

अथवा

उ.11 आज की मानव भौतिकवादी परम्परा से प्रभावित हैं।

schools.aglasem.com

aglasem.com

उ.12 लेखक ने संगीत की जन्म श्रय से माना हैं। (2)

अथवा

उ.12 मुट्ठी भर हाड़ाओं ने महाराणा लाखा को पराजित किया था।

उ.13 सुजान सिंह देवगढ़ रियासत के दीवान थे। (2)

अथवा

उ.13 यम, नियम, हठयोग आदि मन को एकाग्र करने के बाह्म साधन हैं। इनके द्वारा मन की वासनाएँ कुछ समय के लिए दबाई जा सकली हैं।

उ.14 प्राचीन नगरी वाराणसी के पास प्रवाहित गंगा से थोड़ी दूरी पर आयुर्वेद की पाठशाला थी। (2)

अथवा

उ.14 सोन अपने उद्‌गम के साध ही सैकड़ों फुट की ऊचाई से नीचे धरती पर गिरती है, जबकि नर्मदा शांत भाव से पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती है।

उ.15 (1) कलई खुलना = भेद खुलना (2)

(2) नौ दो ग्यारह = भाग जाना

(3) लोहा मानना = प्रभाव स्वीकारना

(प्रयोग – स्वविवेक से)

अथवा

उ.15 (1) पूजारी

(2) कामचोर

(3) नवजात

उ.16 काव्य भावों एवं विचारों की वह शाब्दिक अभिव्यक्ति हैं, जो अलौकिक आनन्द की अनुभूति करता है। (2)

अथवा

उ.16 आश्रय मे ह्रदय में जाग्रत स्थायी भाष, विभाग अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से रस रूप में परिणत होता है।

schools.aglasem.com

aglasem.com

उ.17 निंदा की उत्पत्ति कमजोरी से होती हैं। कर्मढता ही इस प्रवृत्ति से छुटकारा दिला सकती हैं। व्यक्ति कठिन कार्य के द्वारा ही ईर्ष्याद्वेध और उससे उत्पन्न होने वाली निंदा से बच सकता हैं। कर्म के विकास द्वारा हीनता अपने आप समाप्त हो जायेगी और निंदा से छुटकारा मिल जायेगा। (3)

अथवा

उ.17 मानव जीवन में विविध प्रकार की कठिनाइयाँ एवं समस्याएँ आनी हैं। मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए। वीरता के साथ सामना करना चाहिए। अपने आत्मबल को विकसील करना चाहिए। मानव को अपना सर्वस्व समाज और राष्ट्र के हित में न्यौछावर कर देना चाहिए। मानव जीवन की राही सार्थकता है।

उ.18 (1) महा + आशय – स्वर संधि (3)

(2) सत् + जन – व्यंजन संधि

(3) मनः + भाव – विसर्ग संधि

अथवा

उ.18 (1) पाँच मुख वाला = बहुब्रीहि समास

(2) भय से भीत = करण तत्पुरूष समास

(3) तीन लोको का समूह = द्विग समास

उ.19 दृश्य काव्य – रंगमंच पर अभिनय आदि देखकर आनन्द की रसानुभूति कराने वाला काव्य दृश्य काव्य कहा गया है। नाटक, एकाक आदि। (3)

श्रव्य काव्य – जिस काव्य को पढ़कर या सुनकर रसानुभूति होती है, उसे श्रव्य काव्य कहते हैं।

अथवा

उ.19 (1) स्थायी भाव मानव ह्रदय में सदैव रहते हैं जबकि संचारी भाव कुछ समय को जाग्रत होते हैं।

(2) स्थायी भाव की संख्या 9 एवं संचारी की 33 है।

(3) स्थायी भाव का संबंध एक ही रस से होता है जबिक संचारी भाव का अनेक रसो से होता है।

schools.aglasem.com
aglasem.com

उ.20 प्रयोगवाद कवियों में प्रयोगों के प्रति आग्रह रहा और प्रयोगों के फलस्वरूप नई कविता का जन्म हुआ। प्राचीन को नकास्कर नवीनता का प्रयोग किया। अंग्रेजी उर्द आदि के शब्दों से युक्त मिश्रित भाषा, नवीन प्रतीक एवं उपमानों का प्रयोग हुआ। (4)

अथवा

उ.20 मध्यप्रदेश लोकसाहित्य में प्रमुख रूप से आंचलिक और जनजातिय भाषाओं का परम्परागत साहित्य मिलता है। मध्यप्रदेश के प्रमुख चार अंचलों बुन्देलंखण्ड, बघेल खण्ड, मालवा तथा निमाड़ में बुन्देली, बघेली, मालवी तथा निमाड़ी लोक साहित्य उपलब्ध हैं। जनजातिय में भीली, गौड, कोरकू मवासी, बैगानी आदि को सम्मिलित किया जाता है। इस तरह प्रदेश में विविध प्रकार के लोक साहित्य पाये जाते हैं।

उ.21 प्रमुख कवि – (1) ''अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध''

(2) थैयिलीरारण गुप्त (4)

महाकाव्य – (1) 'क्रिय प्रवास'

(2) साकेत

अथवा

उ.21 छायावाद का समय सन् 1920 से 1936 ई. तक माना गया हैं। यह युग हिन्दी कविता के उत्कर्ष का हैं। प्रक्रति के विविध प्रकार के सूक्ष्म रूप इस काव्य में अंकित हैं। प्रेम एवं सौन्दर्य का मोहक चित्रण हैं। भारतीयता तथा मानवता से कविता ओत – प्रोत हैं। इस काल में भाव एवं कला दोनों का ही विकास हुआ है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के जनक माने जाते हैं।

उ.22 ''सूरदासजी''

(1) सूरसागर, साहित्य लहरी (रचनाएँ हैं) (4)

(2) कला पक्ष – सूरदास में माधुर्य ब्रजभाषा में काव्य रचना की है। इनकी भाषा में सरलता, तरलता, सरसता एवं स्वाभाविकता के सर्वत्र दर्शन होते हैं। ब्यंग्य, वक्रता सूर की भाषा की विशेषताएँ है। सूर ने गेय पद को अपनाया है। इनके पदों में भावुकता, तीव्रता एवं संगीतात्मकता की अद्‌भुत समन्वय है।

(3) साहित्य में स्थान – ये भक्ति काल के कृष्ण भक्ति धारा प्रतिविधि कवि हैं। वे वात्सल्य तथा श्रगांर रस के आचार्य है। ब्राजभाषा को संतुलित काव्य – भाषा बनाने का श्रेय सूरदास को हैं। सूर वास्तव में हिन्दी साहित्य काश के सूर (सूर्य) हैं।

schools.aglasem.com
aglasem.com

अथवा

उ.22 ''सुभद्राकुमारी चौहान''

(1) रचनाएँ – (1) भुकुल

(2) त्रिधारा आदि

(2) भाव – पक्ष – इनके काव्य में वीर, श्रगांर एवं वात्सत्य की त्रिवेणी प्रवाहित हैं परन्त काव्य का मूल रस वीर है। राष्ट्र प्रेम से ओत प्रोन स्वतंगता संग्राय की चेतना जन–जन तक पहुँचाने का सरायध्नीय कार्य किया।

(3) कला पक्षा – इनकी भाषा शुद्ध, सरण एवं खड़ी बोली में काव्य रचना की हैं। उर्दू, बुंदेली शब्दो का प्रयोग किया है। आपने सरल, सहज प्रवाह यची मुक्तक शैली का प्रयोग किया है।

(4) साहित्य में स्थान – परिवार, राजनीति और साहित्य के समन्वय जीवन पथ पर हमेशा अग्रसर होकर देश – प्रेम की गहरी छाप छोड़ी है। आधुनिक काल के कवियों में सुभद्राजी का सम्मानजनक स्थान है।

उ.23 हरिकृष्ण ''प्रेमी''

(1) रचनाएँ – (1) ''बादलों के पार''

(2) नया समाज (कोई भी दो पर अंक दे) (4)

(2) भाषा एवं शैली – आपकी भाषा शैली अवसर के अनुसार बदलती है। भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली में साहित्य सृजन है। मुहावरे, लोकोक्ति का प्रयोग है। प्रेमजी ने विविध शैलीयों का प्रयोग किया हैं। भावनात्मक, विचारात्मक, वर्णनात्मक, पौराणिक आदि का सफल प्रयोग किया है।

(3) साहित्य में स्थान – हिन्दी के नाटक कारों में प्रेमजी की विशिष्ट स्थान हैं। उन्होनें धर्मनिरपेक्षता, विश्वबन्धुत्व, राष्ट्रीय जागरण आदि का संदेश अपने नाट्य साहित्य में किया हैं। हिन्दी सेवा के लिए वे विरकाल तक स्मरण किये जायेगे।

schools.aglasem.com
aglasem.com

अथवा

उ.23 (1) रचनाएँ – ''जंजीरे और दीवारे'', भाटी की मूरते आदि (अन्य पर भी अंक दे)

(2) भाषा – बेनीपुरीजी भाषा के जादूगर कहे जाते हैं। आपकी भाषा शुद्ध, सरल, साहित्यिक तथा विषयानुकुल खड़ी बोली है। उन्होने तत्सम, देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया हैं। इनकी भाषा में क्रियाओं का अभाव हैं। अलंकार, लोकेक्ति आदि के प्रयोग से भाषा में सजीवता आ गयी है।

(3) शैली – इनकी शैली वर्णनात्मक, आलो चनात्मक, चित्रोपम, भावनात्मक, प्रतीकात्मक आदि शैली का प्रयोग किया है।

(4) साहित्य में स्थान – बेनीपुरीजी महान विभूति है। आपके गघ में गहन अनुभूतियों और उत्कृष्ण कल्पनाओं की स्पष्ट झांकी मिलती है। बेनीपुरी जी की हिन्दी साहित्य में भूर्धन्य स्थान है।

उ.24 संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तिया 'प्रेम और सौदंर्य' पाठ के 'सौदंर्य बोध' नामक शीर्धक से अवतरित की गई है। इसके कवि 'बिहारी' हैं। (प्रसंग और व्याख्या स्वविवेक से अंक दे) **(4)**

अथवा

उ.24 संदर्भ – प्रस्तुत पघ लारी पाठ्य पुस्तक 'सामाजिक समरसता' से लिया गया है, जिसके रचिता 'कबीर दासजी' है। (प्रसंग एवं व्याख्या पर स्वविवेक से अंक दे)

उ.25 संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'में और मेरा देश' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक श्री कन्हैयालास मिश्र 'प्रभाकर' हैं। (प्रसंग एवं व्याख्या पर स्वविवेक अंक दे) **(4)**

अथवा

उ.25 संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य – पुस्तक 'गेहू और गुलाब' पाठ से अवतरित है। इसके लेखक 'रामवृक्ष बेनीपुरी' हैं। (प्रसंग एवं व्याख्या पर स्वविवेक से अंक दे)

उ.26 स्वविवेक से अंक दे। **(5)**

उ.27 स्वविवेक से अंक दे। **(5)**

उ.28 स्वविवेक से अंक दे। **(7+3=10)**

.....

schools.aglasem.com
aglasem.com